पहचान ली है। आपकी पार्टी में संजय गांधी ने जबरदस्त सेंध लगाई है। अत: मोरारजी भाई के नेतृत्व में आपकी सरकार अधिक समय तक चलने वाली नहीं है।'' मेरी बात पर उन्होंने भरोसा नहीं किया। अत: जो होना था, हो गया।

चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री पद की लालसा में श्रीमती इंदिरा जी के झांसे में आए। मोरारजी भाई की सरकार को धराशायी किया। सब भौंचक्के रह गए। चापलूस अधिकारियों तथा स्वार्थी साथियों की सलाह से देश की हुकूमत चलाने वालों की यही दुर्गति होती है।

सत्ता से वंचित होते ही जनता पार्टी का बिखरना अवश्यंभावी था। पूर्वाश्रमी के भारतीय जनसंघ नेताओं ने ''भारतीय जनता पार्टी'' के नाम से कार्य करने का निर्णय लिया। 1980 में मुम्बई में ''भारतीय जनता पार्टी'' का प्रथम अधिवेशन हुआ। उसमें दीनदयाल जी के ''एकात्ममानव दर्शन'' को तिलांजली दी गई। गांधीवादी समाजवाद का दर्शन अपनाया गया। इस पर संघ-नेतृत्व ने कोई आपत्ति नहीं की। परिणामस्वरूप, ''भारतीय जनता पार्टी'' अन्य दलों के समान एक और सत्ता-पिपासु पार्टी अस्तित्व में आई।

11 फरवरी, 1968 की प्रात: मुगलसराय स्टेशन की रेल पटरियों से सटा पड़ा दीनदयाल जी का शव पाया गया। संयोगवश, परमपूज्य गुरू जी उस समय बनारस में ही थे। वे पोस्टमार्टम के स्थान पर दीनदयाल जी के शव का अंतिम-दर्शन करने पहुंचे। प. पू. गुरू जी दीनदयाल जी को बहुत मानते थे। उनके मुंह से अनायास शब्द निकल पड़े, ''तुम तो नहीं रहे, तुम्हारे ''एकात्ममानव दर्शन'' का क्या होगा?'' प. पू. गुरू जी के ये शब्द मेरे अंत:करण को सतत् चुभते रहते हैं।

संघ-कार्य से लगभग प्रारंभ से जुड़े मा. बाबासाहेब आप्टे परमपूज्य डॉक्टर जी के साथ छाया के समान जुड़े हुए थे। प. पू. डॉक्टर जी की आकांक्षाओं को साकार करना मा. आप्टे जी का जीवन-व्रत था। अपने देशव्यापी समाज को अपना परिवार मानकर तदनुसार संघ स्वयंसेवक अपनी जीवन-रचना करें, यह प. पू. डॉक्टर जी की आकांक्षा थी। संघ-कार्य की इस विशेषता को मा. आप्टे जी ने आत्मसात् कर लिया था।

1946 के 16 अगस्त को मुस्लिम लीग ने कलकत्ते से अपना ''डायरेक्ट एक्शन'' प्रारंभ कर हिन्दुओं का कत्लेआम किया था। देश भर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़क उठे थे।

संयोगवश, उन्हीं दिनों मा. आप्टे जी अपने प्रवास के कार्यक्रम के अनुसार गोरखपुर पहुंचे थे। मैं उस समय गोरखपुर विभाग का संघ-प्रचारक था।

गोरखपुर में संघ की शाखाएं बहुत अच्छी थीं। नगर की 6 शाखाओं में एक हजार से अधिक दैनिक उपस्थिति रहती थी। अधिकांश संख्या तरूणों की ही होती थी।

गोरखपुर में मुस्लिम आबादी काफी थी। अत: गोरखपुर में दंगे की आशंका से लोग भयभीत थे। शहर के पढ़े-लिखे और प्रतिष्ठित लोग 40-50 की संख्या में मा. आप्टे जी से मिलने आए थे। उन सबने मा. आप्टे जी से आग्रह किया था कि वे संघ द्वारा हिन्दुओं की रक्षा करने का दायित्व संभालें।

मा. आप्टे जी ने इन लोगों से कहा, ''आपकी यह अपेक्षा स्वाभाविक है। किन्तु संघ यह दायित्व स्वीकार नहीं कर सकता।'' इस पर गोरखपुर के सबसे बड़े वकील श्री

हरिहर प्रसाद दुबे ने खड़े होकर कहा, ''यदि आपका संघ यह दायित्व स्वीकार नहीं करेगा तो आपके हिन्दू-संगठन की आवश्यकता ही क्या है?'' इसी अर्थ के तर्क अन्य लोगों ने भी प्रकट किए।

मा. आप्टे जी ने इन लोगों से प्रार्थना की, ''आप कृपया शांति से संघ की भूमिका समझने का प्रयास करें। संघ-निर्माता प. पू. डॉक्टर जी ने सब प्रकार के अनुभवों के बाद संघ की नीति-निर्धारित की है। अभी तक हिन्दुओं की सुरक्षा एवं उत्थान का दायित्व कोई न कोई संस्था निभाने के लिए सामने आती रही। समाज स्वयं असंगठित और निर्बल बना रहता था। संस्थाएं तो आती-जाती रहती हैं। समाज स्थायी तत्व है। यदि वह स्वयं समर्थ और स्वावलंबी न बना और किसी न किसी के आश्रय का मुखापेक्षी बना रहा तो उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ेगा।

संघ हिन्दू समाज को समर्थ एवं स्वावलंबी बनाना चाहता है। संघ हिन्दू समाज के संरक्षण का श्रेय लेकर वाहवाही लूटना नहीं चाहता।

आप सब हिन्दुओं के नाते समाज की सुरक्षा करने के लिए स्वयं सिद्ध हों, तो संघ के स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के नाते नहीं, अपितु हिन्दू होने के नाते हर प्रकार के संकट में सबसे आगे दिखाई देंगे।''

मा. आप्टे जी के विचारों से सब सहमत हुए। सबने तय किया कि वे नगर के सभी मोहल्लों में मा. आप्टे जी की सलाह के अनुसार सिद्धता करेंगे। फलस्वरूप, गोरखपुर दंगे से पूर्णत: बच गया था।

संघ की इस घटना ने मेरे अंत:करण पर संघ के मर्म की अमिट छाप छोड़ी है।

मा. आप्टे जी संघ-कार्य को संकुचित दायरे में जकड़ना नहीं चाहते थे। प. पू. डॉक्टर जी की आकांक्षा के अनुसार संपूर्ण समाज को अपना परिवार मानने की अवधारणा को व्यावहारिक धरातल पर साकार करना ही संघ का एकमेव कार्य मानते थे।

राजनीतिक पार्टी बनाने से संघ परोक्ष रूप से ही क्यों न हो, एक पार्टी बने बिना नहीं रहेगा। यह प. पू. डॉक्टर जी की अवधारणा के पूर्णत: प्रतिकूल है। परोक्ष रूप से भी दलगत राजनीति में पड़ने से संघ संपूर्ण समाज का रूप खो बैठेगा। अत: वे अपनी अंतिम सांस तक संघ को दलगत राजनीति से पूर्णत: अलिप्त रखने का आग्रह करते रहे हैं।

50 साल के अनुभव के बाद यह सिद्ध हुआ है कि मा. आप्टे जी का चिंतन वास्तविकता की कसौटी पर खरा उतरा है।

शुभाकांक्षी -

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)